eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

ऑनलाइन शिक्षा– समाजीकरण की नई प्रक्रियाः चुनौतियां एवं संभावनाएं

[1]डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल
[1]सहायक प्रोफेसर– राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिन्दकी, फतेहपुर (उ0प्र0)

Received: 13 July 2020, Accepted: 27 July 2020, Published on line: 30 Sep 2020

Abstract

शिक्षा अपने मूल में समाजीकरण की एक प्रक्रिया है, जब–जब समाज का स्वरुप बदला शिक्षा के स्वरुप में भी परिवर्तन की बात हुई, आज कोरोना संकट के दौर में ऑनलाइन शिक्षा के जरिये शिक्षा के स्वरुप में बदलाव का प्रस्ताव नीति निर्धारकों के द्वारा पुरजोर तरीके से रखा जा रहा है।
शब्द संक्षेप– ऑनलाइन शिक्षा, कोरोना संकट, तकनीकी के विकास, चुनौतियां एवं संभावनाएं।

Introduction

समस्त ऑनलाइन शिक्षा मात्र तकनीक नहीं समाजीकरण की नई प्रक्रिया है, जिसके जरिये सरकार और नीति निर्धारकों की नीति व नीयत को समझा जा सकता है और उसे उसी रुप में देखने की भी जरुरत है। कोरोना संकट में शारीरिक दूरी बनाए रखकर शिक्षा के लिए तकनीकी का प्रयोग एक बात है, वैसे भी तकनीकी के विकास के साथ ही शिक्षा में भी उसका उपयोग होता रहा है। यह होना जरुरी भी है।

ऑनलाइन शिक्षा के द्वारा छात्र अपने घर बैठकर देश व विदेश का कोई भी कोर्स व शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षा में पैसे भी बचते हैं। छात्रों को केवल इंटरनेट और ऑनलाइन क्लास की फीस भरनी होती है।

ऑनलाइन क्लास में पढ़ाई गई चीजें रिकॉर्ड होती है जिसे छात्र उन्हें पुनः भी देख सकते हैं। जो छात्र स्कूल व कॉलेज में है वह भी अपनी स्कूली शिक्षा के साथ–साथ ऑनलाइन बहुत से कोर्सेज और नई चीजें सीख सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा के द्वारा बच्चे हुनर को भी निखार सकते हैं जैसे की पेंटिंग, कुकिंग, कढ़ाई, सिलाई आदि का प्रशिक्षण भी ऑनलाइन उपलब्ध है। ऑनलाइन शिक्षण में शिक्षक छात्रों को बहुत ही दिलचस्प और अलग–अलग तरीके से पढ़ाते हैं, जिससे छात्रों की रूचि उसमें बढ़ती है।

कोरोना महामारी के इस दौर में ऑनलाइन शिक्षा ने एक बहुत ही बेहतरीन रोल निभाया है। इसमें छात्रों की सुरक्षा का भी ध्यान रखा गया और साथ ही उनकी शिक्षा को भी ऑनलाइन क्लासेज के द्वारा सुचारू रूप से पूरा कराया गया।

ऑनलाइन कक्षाओं ने संसाधनों का एक नया आकाश रच दिया है, जो व्यक्ति आपकी किसी क्लास, किसी आयोजन, कार्यशाला के लिए दो घंटे का समय लेकर नहीं आ सकता, यात्रा में लगने वाला वक्त नहीं दे सकता। वही व्यक्ति हमें आसानी से उपलब्ध हो जाता है, क्योंकि उसे पता है कि उसे अपने घर या ऑफिस से ही यह संवाद करना है और इसके लिए उसे कुछ अतिरिक्त करने की

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

जरूरत नहीं है। यह अपने आप में बहुत गजब समय है। जब मानव संसाधन के स्मार्ट इस्तेमाल के तरीके हमें मिले हैं। आप दिल्ली, चेन्नई या भोपाल में होते हुए भी विदेश के किसी देश में बैठे व्यक्ति को अपनी ऑनलाइन कक्षा में उपलध करा सकते हैं।

इससे शिक्षण में विविधता और नए अनुभवों का सामंजस्य भी संभव हुआ है। इस शिक्षा का ना तो भूगोल है, न ही समय सीमा। लॉकडाउन के इन दिनों में सभी ने कई विषयों में ऑनलाइन कोर्स कर अपने को ज्ञानसमृद्ध किया है। भोपाल का एक विश्वविद्यालय सुदूर अरुणाचल विश्वविद्यालय के विद्वान् मित्रों के साथ एक साझा संगोष्ठी ऑनलाइन आयोजित कर लेता है। यह किसी विदेशी विश्वविद्यालय के साथ ही संभव है। यात्राओं में होने वाले खर्च, आयोजनों में होने वाले खर्च, खानपान के खर्च जोड़ें तो ऐसी संगोष्ठियां कितनी महंगी हैं।

यह कहा जा रहा कि ऑनलाइन कक्षाएं वास्तविक कक्षाओं का विकल्प नहीं हो सकतीं, क्योंकि एक शिक्षक की उपस्थिति में कुछ सीखना और उसकी वर्चुअल उपस्थिति में कुछ सीखना दोनों दो अलग–अलग परिस्थितियां हैं।

संभव है कि हमारा अभ्यास वास्तविक कक्षाओं का है और हमारा मन और दिमाग इसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है कि ऑनलाइन कक्षाएं भी सफल हो सकती हैं। दिमाग की कंडीशनिंग (अनुकूलन) कुछ ऐसी हुई है कि हम वर्चुअल कक्षाओं को वह महत्ता देने के लिए तैयार नहीं हैं जो वास्तविक कक्षाओं को देते हैं। फिर भी यह मानना होगा कि आभासी दुनिया आज तमाम क्षेत्रों में वास्तविक दुनिया को मात दे रही है।

हमारे निजी जीवन में हम जिस तरह डिजिटल हुए हैं, क्या वह पहले संभव दिखता था। हमारी बैंकिंग, हमारे बाजार, हमारा खानपान, तमाम तरह के बिल भरने की प्रक्रिया, टिकिटिंग और ट्रैवलिंग के इंतजाम क्या कभी ऑनलाइन थे? पर समय ने सब संभव किया है। आज एटीएम जरूरत है तथा ऑनलाइन टिकट वास्तविकता। हमारी तमाम जरूरतें आज ऑनलाइन ही चल रही हैं। ऐसे में यह कहना बहुत गैरजरूरी नहीं है कि ऑनलाइन माध्यम ने संभावनाओं ने नए द्वार खोल दिए हैं। ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम को इस कोरोना संकट ने मजबूत कर दिया है।

अतः कहा जा सकता है कि कोविड–19 और लॉकडाउन के प्रभाव के कारण शिक्षण संस्थान आज शिक्षा के नवीन मार्ग तलाश रहा है। जहाँ ऑनलाइन शिक्षा एक सरल माध्यम के रुप में उभर कर सामने आया है। वहीं यह भी सत्य है कि ऑनलाइन शिक्षा का उपलब्धीकरण हर व्यक्ति के लिए संभव नहीं है।

प्रत्येक व्यक्ति ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर पाये इसके लिए व्यापक योजना बनाकर उसको वास्तविक धरातल पर उतारने के लिए सरकारों को व्यवस्था करनी होगी। ध्यान रहे कि हम एक लोकतांत्रिक राष्ट्र के नागरिक हैं और लोकतांत्रिक राष्ट्र में शिक्षा का उपलब्धीकरण प्रत्येक व्यक्ति स्तर तक होना आवश्यक है। साथ ही यह कहना भी उचित होगा कि ऑनलाइन शिक्षा ने जहाँ शिक्षा की प्राप्ति को सरल बनाया है वहीं इसके कतिपय दूरगामी दुष्परिणाम भी हमें परिलक्षित हो रहे हैं।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

निष्कर्ष एवं सुझाव–

यद्यपि ऑनलाइन शिक्षा से व्यक्ति के समय, श्रम व धन की बचत होती है। लेकिन व्यापक स्तर पर मंथन करने पर इस व्यवस्था की उभर कर आई कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु/चुनौतियाँ निम्नवत हैं :–

1. ऑनलाइन शिक्षा की पहुँच प्रत्येक व्यक्ति तक नहीं है। तकनीक व्यवधान की समस्या तथा पिछड़े तबके के क्षेत्र शिक्षा से वंचित हैं।
2. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के विकल्प के रूप में संभव नहीं।
3. स्मार्टफोन, कम्प्यूटर डेटा आदि की लागत क्लासरुम की शिक्षा की लागत में बड़ा अंतर तथा डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर की बहुत कमी है।
4. ऑनलाइन शिक्षा की तकनीकों से प्रत्येक शिक्षक प्रशिक्षित नहीं है तथा भाव सम्प्रेषण पूर्णरुपेण सम्भव नहीं।
5. परम्परागत शिक्षण प्रणाली के दौरान छात्र कई प्रकार के व्यवहारिक ज्ञान को भी प्राप्त करता है जो कि ऑनलाइन शिक्षा में संभव नहीं है।
6. डिजिटल माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने से स्वास्थ्य पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है।
7. ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था प्रत्येक स्तर तक लागू हो पाये इसके लिए व्यापक पैमाने पर व्यवस्था करने की आवश्यकता होगी।

संदर्भ सूची

1. (2020) – नई शिक्षा नीति : प्रमुख प्वाइन्ट्स : एक नजर में, 30 जुलाई।
2. (2020) – https://m.jagaran.com > editorial > ap - National educational policy. 17 August.
3. www.Jagran.com
4. Harvey, L. and Stensaker, B., 2008, 'Quality culture: understandings, boundaries and linkages', European Journal of Education 43(4), pp. 427–42.
5. Sehrawat S.S. Quality Assurance Higher Education, Education University News , 49 (06), June25-01 July